कानपुर क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर

लखनऊ मण्डल रजत जयन्ती स्मारिका

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण
लखनऊ मण्डल, लखनऊ

कानपुर परिक्षेत्र के महत्वपूर्ण केन्द्रीय संरक्षित स्मारकों / स्थलों को दर्शाता मानचित्र

उ0

भारत

लखनऊ मण्डल

कानपुर परिक्षेत्र

कुरबान मोहम्मद का मकबरा

बांगरमऊ

बिल्हौर

कुंऐ के अन्दर संस्कृत अभिलेख (सुभानपुर)

टीला, लालाभगत

रसूलाबाद

धुव टीला, बिठूर

उन्नाव

सुबेदार का तालाब कब्रिस्तान

कब्रिस्तान, कचहरी

स्मारकीय कुआँयुक्त उद्यान

सवादा कोठी

कीलसे इन्ट्रेन्चमेंट

सन्दलशाह के समीप स्थित तालाब

कानपुर देहात (अकबरपुर)

सिकंदरा

कोस मीनार राजपुर

कानपुर

मन्दिर, परौली

इष्टिका निर्मित मन्दिर, कुरथा

इष्टिका निर्मित मन्दिर, भीतरगाव

मन्दिर बेहटा

भोगनीपुर

कोस मीनार गौर

घाटमपुर

इष्टिका निर्मित मन्दिर, निबिया खेड़ा

पैमाना रहित

कानपुर क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर

प्राचीन काल में मौर्य साम्राज्य, पाटलिपुत्र के गुप्तवंश और कन्नौज के साम्राज्य का अंग रहे कानपुर का इतिहास काफी प्राचीन है। अकबर के काल में सर्वप्रथम कानपुर के नाम का उल्लेख 16वीं शताब्दी के अब्बास सरवानी कृत ''तारीख–ए–शेरशाही'' में हुआ था। ब्रिटिश काल के दौरान कानपुर में कम्पनी हुकूमत के समय इस जनपद के नाम का उल्लेख कम्पनी के कागजों में ''**Cawnpore**'' नाम से मिलता है।

'तारीख–ए–कानपुर' के अनुसार 1750 ई0 में जन्माष्टमी के दिन सचेंडी के राजा हिन्दू सिंह चन्देल गंगा स्नान करने आये। इस रमणीक स्थल को देखकर उनकी इच्छा हुई कि इस स्थान पर कोई गाँव आबाद किया जाय। अतएव उसी समय अनुष्ठान कर हिन्दू सिंह चन्देल ने ''कान्हापुर'' गांव की नींव डाली, जो कालान्तर में कानपुर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

पौराणिक साक्ष्यों के अनुसार यहाँ पर राजा बलि ने अपनी राजधानी बनाई और मुक्ता देवी मंदिर का निर्माण करवाया। एक पौराणिक कथा के अनुसार तपस्वी बालक ध्रुव और उसके पिता उत्तानपाद की राजधानी बिठूर थी।

जाजमऊ का कस्बा कानपुर नगर से पाँच मील पूर्व में गंगा नदी के तट पर स्थित है। जनश्रुति के अनुसार यह कस्बा पौराणिक काल में राजा ययाति की राजधानी थी। उन्हीं के नाम से यह ययातिमऊ कहलाया जिसका कालान्तर में अपभ्रंश होकर जाजमऊ नाम पड़ा। जाजमऊ में राज्य पुरातत्व विभाग के द्वारा किए गए उत्खननों के फलस्वरूप इस स्थल पर लगभग 1200 ई० पू० तक के अवशेष प्राप्त हुए हैं। इस स्थल से सिकन्दर लोदी (1521 ई०) के 36 सिक्के उत्खनन से प्राप्त हुए हैं, जो इस क्षेत्र पर सिकन्दर लोदी के आधिपत्य को प्रमाणित करते हैं।

वर्तमान कानपुर के अन्तर्गत आने वाला परिक्षेत्र पूर्व में प्राचीन पंचाल साम्राज्य का अंग था। मूसानगर, जमुई, राधन तथा काटर–उमर गढ़ इत्यादि स्थलों पर हुए विस्तृत उत्खननों द्वारा इस क्षेत्र के पुरातात्विक कालक्रम का निर्धारण सम्भव हो सका तथा मूसानगर में यमुना नदी के बाएं तट पर भोगनीपुर तहसील में नव पाषाण कालीन कुठार प्राप्त होने से ऐसा प्रतीत होता है कि इस स्थल पर मानव सभ्यता के चिन्ह प्रागैतिहासिक काल से विद्यमान थे। मूसानगर के समीप स्थित काटर नामक पुरास्थल पर दो अठपहल पाषाण स्तम्भों के अवशेष मिले हैं जिनके ऊपर सिंह आरूढ़ है। इन स्तम्भों में भरहुत कला की स्पष्ट छाप दिखाई पड़ती है।

बिठूर के निकट रमेल नामक ग्राम से प्राप्त ताम्र एवं कांस्य युगीन उपकरणों की उपलब्धता इस क्षेत्र की प्राचीनता को प्रमाणित करती है। आज से लगभग 60–65 वर्ष पूर्व बिठूर में गंगा के बांये तट के पास ताम्र निधियों के छः उपकरण प्राप्त हुए थे जिनमे से तीन मत्स्य भाले तथा तीन कुल्हाड़ियाँ थीं। मत्स्य भालों में सबसे बड़े उपकरण की माप 28.2 सेमी० तथा इसके ब्लेड की लम्बाई 15.7 सेमी० है। ताम्र कुल्हाड़ियों में सबसे बड़ी कुल्हाड़ी की लम्बाई 23.8 सेमी० है। इसके अतिरिक्त कानपुर के रूरा क्षेत्र में स्थित भंवरपुर ग्राम से वर्ष 2007 में ताम्रनिधियाँ प्राप्त हुई थीं जिसमें तांबे के छल्ले तथा मत्स्य भाले सम्मिलित थे।

ये स्मारक हमारी अमूल्य धरोहर हैं, इनका संरक्षण हमारा नैतिक कर्त्तव्य है।

भंवरपुर से प्राप्त ताम्रनिधियाँ

उपरोक्त के अतिरिक्त कानपुर परिक्षेत्र में स्थित अन्य स्थलों से भी ताम्रनिधियाँ प्राप्त हुई हैं।

बिठूर स्थित वाल्मीकि आश्रम तथा ध्रुव के टीले से प्रारंभिक ऐतिहासिक काल तक के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। स्थानीय परम्पराओं के अनुसार ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना पूर्ण हो जाने पर बिठूर के ब्रह्मेश्वर घाट पर एक घोड़े की बलि दी थी, जिसके उपरान्त यह स्थल ब्रह्मावर्त तथा कालान्तर में बिठूर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ऐसा कहा जाता है कि बलिदान किए गये अश्व के नाल की एक कील अभी तक इस घाट के एक सोपान पर जड़ी हुई है, जो पवित्र बलिदान का प्रतीक है।
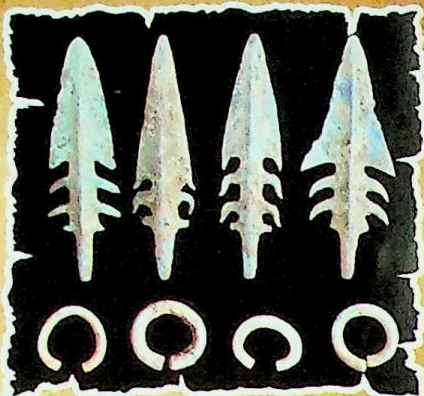
कानपुर से लगे हुए उन्नाव जनपद में गंगा नदी के बांये तट पर स्थित परिअर नामक पुरास्थल पर हुए उत्खनन से ज्ञात होता है कि द्वितीय सहस्त्राब्दि के प्रारम्भ में यह स्थल आबाद हो चुका था। यहाँ से गैरिक मृदभाण्ड संस्कृति, कृष्ण लोहित मृदभाण्ड संस्कृति, चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति, उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड संस्कृति तथा शुंग–कुषाण कालीन संस्कृति के अवशेष प्रकाश में आये हैं।

सन् 1857 ई0 में अंग्रेजी शासन के दौरान कानपुर एक सैन्य छावनी बन गया था जिसने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नाना साहब तथा तात्या टोपे ने कानपुर तथा बिठूर में अंग्रेजों के खिलाफ जमकर युद्ध किया।

पुरातत्वीय दृष्टिकोण से कानपुर परिक्षेत्र में प्रागैतिहासिक काल से लेकर ब्रिटिश काल तक के अनेकों पुरास्थल एवं स्मारक अवस्थित हैं जिनमें उत्खनित पुरास्थल, प्राचीन देवालय, कोस मीनार, कुँए, कब्रगाहें एवं अन्य स्मारक शामिल हैं।

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के कानपुर उपमण्डल के अन्तर्गत केन्द्र सरकार द्वारा संरक्षित 34 राष्ट्रीय स्मारक/पुरास्थल आते हैं जिनमें बेहट, भीतरगांव, बिहूपुर, कंचिलीपुर, कुर्था, परौली स्थित इष्टिका मंदिर, झिझिंगा, लाला भगत, बिठूर, डूमापुर में स्थित पुरास्थल तथा सुभानपुर में संस्कृत अभिलेख, बिछियापुर का तालाब, ऑयोना क्रास गार्डेन, कचहरी कब्रिस्तान, स्मारकीय कूप उद्यान, सवादा कोठी, सूबेदार का तालाब स्थित कब्रिस्तान एवम् व्हीलर्स इन्ट्रेन्चमेन्ट, इत्यादि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त भोगनीपुर, गौर, जल्लापुर, सिकन्दरा, पीतमपुर, सरदारपुर, पैलावर इत्यादि स्थलों पर भारत सरकार द्वारा संरक्षित कोस मीनारें

कोस मीनार, पीतमपुर, कानपुर

ये स्मारक हमारी अमूल्य धरोहर हैं, इनका संरक्षण हमारा नैतिक कर्त्तव्य है।

हैं जिनका निर्माण शेरशाह सूरी के आदेश पर सड़क–ए–आज़म (जी० टी० रोड) के किनारे करवाया गया था। इन कोस मीनारों के माध्यम से दूरी की गणना की जाती थी तथा रात्रि में इन कोस मीनारों में बने आलों में प्रकाश की व्यवस्था की जाती थी। इनमें से कुछ विशिष्ट स्मारकों का विवरण निम्नवत् है।

प्राचीन इष्टिका मन्दिर, भीतरगांव

इष्टिका मन्दिर, भीतरगांव, कानपुर देहात

पूर्वाभिमुख भीतरगांव का यह मन्दिर गुप्तकालीन इष्टिका–स्थापत्य का एक प्राचीनतम उदाहरण है। मन्दिर की तलछन्द योजना, त्रिरथ नियोजन के अनुसार है जिसमें सभी तरफ से वहिर्वेष्टित भद्र हैं। वरन्डिका का अर्द्धचन्द्राकार प्रवेश द्वार ईटों से निर्मित है। यह मन्दिर दो बहिर्मुखी कोणों के साथ वर्गाकार तलछन्द योजना पर निर्मित है जिसमें 4.57 मी0 वर्गाकार गर्भगृह तथा 2.13 मी0 वर्गाकार वरन्डिका एक अन्तराल द्वारा जुड़े हुए हैं। मन्दिर का वाह्य भाग मुड़ी हुई ईंटों और बड़े ही जतन से तराशे गये मृण्मूर्ति–फलकों तथा समान अन्तराल पर बनाये गये भित्ति–स्तम्भों के अलंकरणों से सुशोभित है। सबसे ऊपर दोहरी छाद्य–पट्टिका (छाजल) पर एक असाधारण एवं सुन्दर चित्रवल्लरी की नूतन तथा सुबोध प्रस्तुति गुप्त शैली की विशिष्टता को दर्शाती है। दीवालों के ऊर्ध्वाधर बढ़ने की प्रवृत्ति ऊपर एक कोण पर यह इंगित करती है कि शिखर की ऊँचाई अपनी चोटी तक पहुँच कर 20 मीटर की रही होगी। मृण्मूर्ति कला के कुछ अद्वितीय उदाहारणों में विष्णु का वराह अवतार, चार हाथों वाली दुर्गा और चार हाथों वाले गणेश का अंकन प्रमुख है। मन्दिर की शैली को देखते हुए इसे पांचवी शती0 ई0 में निर्मित माना जा सकता है।
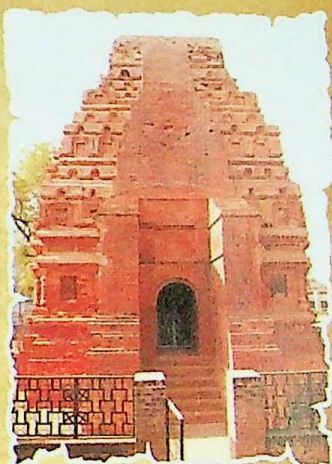
इष्टिका मन्दिर, निबिया खेड़ा, कानपुर

निबिया खेड़ा का इष्टिका मन्दिर, भदवारा

पूर्वाभिमुख यह मन्दिर पंचायतन शैली का है, जिसमें चारों कोनों पर एक–एक लघु मन्दिर स्थापित हैं। चूँकि यहाँ जगती का अधिस्थापन नहीं है, अतः मन्दिर का वेदीबन्ध से ऊपर का भाग ही दृष्टव्य है। अन्दर से गर्भगृह वर्गाकार है परन्तु बाहर से यह ज्यामितीय रूप से दस कोनों वाला है। ललाटबिम्ब के रूप में गजलक्ष्मी की मूर्ति अंकित होने से ये स्पष्ट होता है कि मूलरूप से यह एक विष्णु मन्दिर था। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी समय यह शिव मन्दिर में

ये स्मारक हमारी अमूल्य धरोहर हैं, इनका संरक्षण हमारा नैतिक कर्तव्य है।

परिवर्तित हुआ और भद्रेश्वर के नाम से जाना गया। मण्डप का मूलरूप नष्ट हो चुका था जिन पर बाद में एक आधुनिक संरचना बनाई गयी। मन्दिर का अन्दरूनी भाग सादा है परन्तु वाह्य भाग पच्चीकारी की गई ईंटों से अलंकृत है। गर्भगृह की चौखट की द्वार–शाखाओं के निचले भाग में गंगा व यमुना का उत्कृष्ट अलंकरण है। शैलीगत विशेषताओं के आधार पर मंदिर की तिथि 9वीं–10 वीं शती ई० निर्धारित की जा सकती है।

प्राचीन इष्टिका मन्दिर, कंचिलीपुर, कानपुर

कंचिलीपुर का मंदिर रिंद नदी के तट पर लखौरी ईंटों एवम् चूने के मसाले से निर्मित किया गया था जो पलस्तर द्वारा बनी गढ़नों द्वारा अलंकृत है। इस अष्टकोणीय मंदिर के गर्भगृह के मध्य में शिवलिंग स्थापित है। उत्तर मध्यकालीन शैली में निर्मित यह मंदिर एक ऊँचे चबूतरे पर स्थित है तथा इसके गर्भगृह के ऊपर उल्टा कमल युक्त ऊँचा गुम्बद विद्यमान है। वर्तमान में प्राचीन ईंटों से निर्मित मंदिर के अवशेष इस स्थल पर विद्यमान नहीं हैं, यद्यपि शिवलिंग तथा द्वार–चौखट, जो इस नवीन मंदिर में पुनः उपयोग में लाए गये है, देखने में प्राचीन प्रतीत होते हैं।
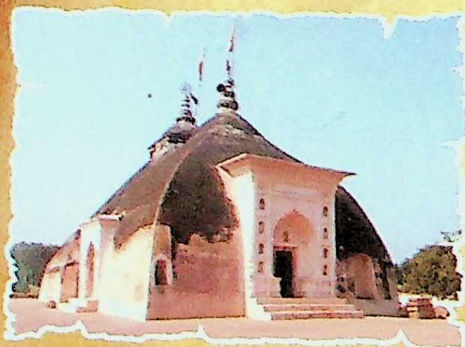
प्राचीन इष्टिका मन्दिर, कंचिलीपुर (कानपुर)

जगन्नाथ मंदिर तथा सम्बन्धित पुरावशेष, बेहट, कानपुर

इस पुनर्नवीकृत मंदिर में एक गर्भगृह विद्यमान है जो इस स्थल पर एक प्राचीन ईट व प्रस्तर निर्मित मंदिर होने का प्रमाण है। बड़ी संख्या में विशाल एवं सुन्दर ढंग से निर्मित प्रस्तर मूर्तियाँ, अलंकृत पत्थरों के टूटे खण्ड, द्वार–चौखट के अलंकृत खण्ड तथा स्तम्भ आदि इस मंदिर के अहाते में पड़े हैं, अथवा इस मंदिर की मरम्मत में पुनः प्रयोग किये गये हैं। इस मंदिर के एक कक्ष में नन्दी पर आरूढ़ उमा–महेश्वर तथा शेषशायी विष्णु की प्रतिमाएं उल्लेखनीय हैं तथा दूसरे कक्ष में गणेश तथा लक्ष्मी की प्रतिमाएं हैं। इसके अतिरिक्त मंदिर परिसर में एक गुप्त कालीन प्रस्तर स्तम्भ कुछ अन्य प्रतिमाओं के साथ पड़ा हुआ है।

जगन्नाथ मंदिर, बेहट, कानपुर

ये स्मारक हमारी अमूल्य धरोहर हैं इनका संरक्षण हमारा नैतिक कर्तव्य है।

महादेव मन्दिर, परौली, कानपुर देहात

महादेव मन्दिर, परौली (कानपुर देहात)

वर्तमान में यह मंदिर भग्नावस्था में है। एक वृत्ताकार जगती पर स्थित यह मंदिर तल–विन्यास में बहुकोणीय है। इसके गर्भगृह के अन्दर एक शिवलिंग स्थापित है जिसके कारण यह मंदिर स्थानीय लोगों में महादेव बाबा के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर की वाह्य भित्ति पर सांचे में ढली हुई सुन्दर ईंटों का अलंकरण मिलता है। शैली के अनुसार यह मंदिर एक मध्यकालीन कृति है। इस मंदिर का ऊपरी भाग ढह चुका है।
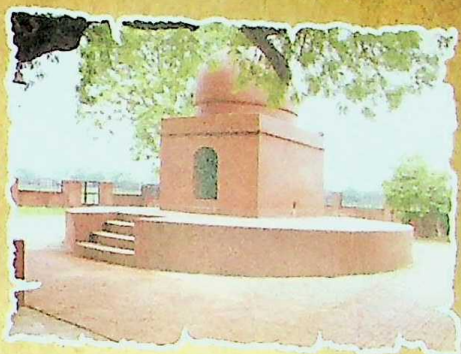
कुर्था स्थित देवालय

कुर्था स्थित देवालय

इस मंदिर के प्रांगण में अन्दर तीन देवालय–मुख्य मंदिर, पंचायतन मंदिर एवं गोलाकार मंदिर स्थित हैं। मुख्य मंदिर भू–विन्यास में त्रिरथ है तथा 0.75 मीटर ऊँची जगती पर निर्मित है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित था जिसमें उच्चकोटि की पच्चीकारी एवं उभारदार अलंकृत पट्टिकाएं उल्लेखनीय हैं। वर्तमान में इस मंदिर में वर्गाकार गर्भगृह विद्यमान है।

यहाँ स्थित दूसरा देवालय भू–विन्यास में पंचायतन है जिसका केवल ध्वंसावशेष ही विद्यमान है। यहाँ पर स्थित तीसरा देवालय बाहर से गोलाकार तथा अन्दर से वर्गाकार है। यहां पर हुए उत्खनन में मिट्टी की बनी एक स्त्री प्रतिमा तथा पाषाण प्रतिमा के कुछ टुकड़े प्राप्त हुए थे। भू–विन्यास में बाहर से लगभग 11 मीटर वर्गाकार यह मंदिर भग्नावस्था में प्राप्त हुआ था। मंदिर के निचले भाग में सादी किन्तु उभारयुक्त पच्चीकारी निर्मित है जिसके ऊपर पकी मिट्टी के पट्टों की कई श्रृंखलाएं हैं, जो अर्धस्तम्भों द्वारा विभक्त हैं। इन अर्धस्तम्भों के मध्य में अनेक मृण्मूर्तियाँ सुसज्जित हैं। ये अर्धस्तम्भ अत्यन्त अलंकृत छजली से युक्त है, जो मंदिर के चारों ओर दिखाई पड़ती है।

कुर्था स्थित मुख्य मंदिर गुप्तोत्तर कालीन संरचना है जबकि यहाँ स्थित अन्य देवालय पूर्व मध्यकालीन अथवा मध्यकालीन संरचनाएं हैं।

इस मंदिर के समीप ईंटों के एक अन्य निर्माण के अवशेष दिखाई पड़ते हैं, जो बाहर से सोलह पहल है तथा इसके मध्य में 3.4 मीटर व्यास का एक गर्भगृह निर्मित है।

कचहरी कब्रिस्तान ,कानपुर

कचहरी कब्रिस्तान, कानपुर

कानपुर का कचहरी कब्रिस्तान उस समय का है, जब अवध के नवाब से सन् 1765 ई० में हुये अनुबन्ध के उपरान्त यूरोपियन पल्टन कानपुर पधारी थी। उस समय यह स्थान अफसरों के कब्रिस्तान के नाम से जाना गया। कालान्तर में सन् 1857 ई० के संग्राम के बाद जब यहां पर बने फ्लैग स्टाफ बैरक्स 'कचहरी ला कोर्ट' में परिवर्तित हो गये, तभी से इसे 'कचहरी कब्रिस्तान' के नाम से जाना गया। इस क़ब्रिस्तान में विशिष्ट यूरोपियन पुरूष और महिलाएं, फौजी अफसरों समेत ईस्ट इंडिया कंपनी के नौकरशाह, विशिष्ट व्यापारी, उनकी पत्नियां एवं बच्चे दफन हैं। यहाँ पर सन् 1773 से 1856 ई० तक की 704 कब्रें हैं जिनमें से 291 कब्रें लेख युक्त हैं।

आयोना क्रास गार्डेन, कानपुर

इस छोटे से कब्रिस्तान में, नाना साहब की सेनाओं द्वारा व्हीलर के खाई युक्त सैन्य भवन की रक्षा करते हुए मारे गये, यूरोपीय पुरूषों, स्त्रियों तथा बच्चों के देहावशेषों को दफन किया गया था। एक चारदीवारी से परिवेष्टित इस कब्रिस्तान के मध्य में एक प्रस्तर निर्मित स्मृति–स्तम्भ स्थापित है जिसके ऊपर क्रास निर्मित है।

आयोना क्रास गार्डेन, कानपुर

स्मारकीय कूप उद्यान, कानपुर

स्मारकीय कूप उद्यान, कानपुर

कम्पनी बाग के नाम से प्रसिद्ध, इस उद्यान का निर्माण अंग्रेजों ने भारतीय पलटनों द्वारा, 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में इस स्थल पर अवस्थित कुएं में फेंके गये, अंग्रेज सिपाहियों की स्मृति में करवाया था। कालान्तर में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा, प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में कानपुर में शहीद हुए भारतीय सिपाहियों की स्मृति में इस स्थल का नाम बदलकर नाना राव पार्क कर दिया गया। उद्यान परिसर के अन्दर, कुएं की प्रस्तर जाली तथा फव्वारे के टुकड़े इधर–उधर बिखरे हुए हैं।

ये स्मारक हमारी अमूल्य धरोहर हैं, इनका संरक्षण हमारा नैतिक कर्तव्य है।

अभी यह कुआँ, लाल बलुए पत्थर की पटिया द्वारा पूरी तरह से ढका हुआ है। विद्रोह के दौरान एक सौ तैंतीस सिपाहियों को यहां एक पुराने बरगद के वृक्ष पर लटकाकर फांसी दी गयी थी, जो कि हमें हमारे देश की स्वतन्त्रता के लिए उनके बलिदान की स्मृति दिलाता है।

सवादा कोठी, कानपुर

सवादा कोठी, कानपुर

इस स्मारक का निर्माण अंग्रेजों द्वारा करवाया गया था तथा इसका उपयोग नाना साहब ने सन् 1857 ई० में कानपुर की घेराबंदी के दौरान अपने आवास के रूप में किया था। अभिलेखीय प्रमाण के अनुसार लगभग एक सौ पच्चीस यूरोपीय औरतों और बच्चों को तात्या टोपे की पलटन द्वारा 25 जून 1857 को बंदी बनाया गया था। कानपुर की घेराबन्दी के दौरान इस कोठी परिसर को ध्वस्त कर दिया गया था। इस स्थल पर वर्तमान में ईंटों के मलबे के ऊपर लोहे के सीखचों से परिवेष्टित एक स्मृति–स्तम्भ ही शेष है।

सूबेदार का तालाब स्थित ब्रिटिश कब्रगाह

सूबेदार का तालाब स्थित ब्रिटिश कब्रगाह, कानपुर

इस स्थल पर अंग्रेज पुरूषों, स्त्रियों तथा बच्चों की कब्रें तथा स्मृति–स्तम्भों का निर्माण अच्छी पकी ईंटों तथा चूने के मसाले द्वारा अंग्रेजों द्वारा करवाया गया था। एक चारदीवारी के अन्दर स्थित इन कब्रों पर चूने के पलस्तर की गढ़न बनी है।

व्हीलर का इन्ट्रेन्चमेन्ट (खाईबन्दी), कानपुर

व्हीलर (अंग्रेजों सेना के नायक अधिकारी) ने इस स्थल का चुनाव सन् 1857 ई० में आपात स्थितियों में यूरोपीय (ब्रिटिश) राजनीतिक प्रतिनिधियों की सुरक्षा हेतु किया था। इस उद्देश्य हेतु उसने दो एकतलीय सैन्य आवासों का निर्माण कर इसे चारों ओर एक खाई से घेर दिया। वह खाईबन्दी युक्त भवन एक खुले मैदान में स्थित था। इस स्थल पर चारदीवारी के अन्दर अंग्रेज अधिकारियों की कब्रें एवं स्मृति स्तम्भ युक्त कब्रगाह स्थित है।

ये स्मारक हमारी अमूल्य धरोहर हैं, इनका संरक्षण हमारा नैतिक कर्तव्य है।

लाला भगत पुरास्थल

यह ग्राम अक्षांश 26°41′ उ0 तथा देशांतर 79°52′ पू0 में डेरापुर से 58 कि0मी0 तथा कानपुर से 92 कि0मी0 की दूरी पर स्थित है। यह टीला पूर्व–पश्चिम में 350 मी0 तथा उत्तर–दक्षिण में 250 मी0 तक विस्तृत है। इस टीले की ऊँचाई 14 मी0 है। इस प्राचीन टीले पर ईंटों के टुकड़े तथा अन्य प्राचीन अवशेष यत्र–तत्र बिखरे हुए हैं जो प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल से लेकर 10वीं–11वीं शताब्दी ई0 तक के हैं। इनमें से कुछ पूरी ईंटें 40X29X8 सेमी0, 37X27X7.5 सेमी0 तथा 24X18X6 सेमी0 माप की हैं। इस पुरास्थल से लाल स्लिप युक्त तथा लाल मृदभाण्ड बहुतायत में प्राप्त होते हैं। इस पुरास्थल से प्राप्त 10वीं–11वीं शताब्दी के अवशेष विशेष उल्लेखनीय हैं। उस काल में यह स्थल कन्नौज के राजा जयचन्द के अधीन एक स्थानीय शासक की राजधानी थी। इस स्थल पर शुंग एवं कुषाण काल से पूर्व के पुरावशेष एक वृहद् टीले पर विद्यमान हैं, जहां एक आधुनिक मन्दिर के अन्दर स्थापित एक अभिलिखित प्रस्तर स्तम्भ है। इस स्तम्भ पर कम उभरे हुये सूर्य एवं गजलक्ष्मी के अंकन हैं जो कि सूर्य के प्राचीनतम अंकनों में से है। इस प्रस्तर–स्तम्भ में शीर्ष पर एक मुर्गे की प्रतिमा थी जिसके अवशेष मन्दिर के समीप दिखलाई पड़ते हैं।

लाला भगत पुरास्थल

इष्टिका एवं खंडित मूर्तियों से युक्त टीला (भीतरगांव)

यह टीला भीतरगांव के मुख्य मंदिर से लगभग 160 मीटर की दूरी पर दक्षिण में स्थित है तथा झिन्झी नाग के नाम से स्थानीय लोगों में जाना जाता है। यह टीला ईंटों एवं टूटी प्रतिमाओं से आच्छादित है। इस स्थल पर एक आयताकार मंदिर का कक्ष (लगभग 6.75 X 2.25 मी0) है, जिसका प्रवेश पूर्व की ओर से है। इस संरचना की पृष्ठ भित्ति में चार आले निर्मित हैं। निर्माण शैली तथा गढ़न युक्त ईंटों की बनावट के अनुसार यह मंदिर भीतरगांव के मुख्य मंदिर की भांति गुप्त कालीन है।

संरक्षण कार्य

कानपुर परिक्षेत्र में स्थित भारत सरकार द्वारा संरक्षित कई राष्ट्रीय स्मारक काल के कुप्रभाव के कारण अत्यन्त जर्जर अवस्था में थे। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा सन् 1985 में लखनऊ मण्डल की स्थापना के बाद सर्वप्रथम इन स्मारकों के क्षरण के कारणों का अध्ययन किया गया तदुपरान्त आवश्यकतानुसार संरक्षण का कार्य पुरातात्विक संरक्षण के आदर्श सिद्धान्तों के अनुरूप किया गया।

इन स्मारकों में भीतर गांव, निबिया खेड़ा, कुर्था, कंचिलीपुर, परौली, बिहूपुर स्थित ईंट निर्मित मंदिर; जगन्नाथ मंदिर, बेहट; कचहरी कब्रिस्तान, कानपुर; विभिन्न स्थलों पर

स्थित कोस मीनारें इत्यादि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण स्मारकों के समुचित संरक्षण के लिये कटिबद्ध है जिससे हम इस समृद्ध धरोहर को अपनी भावी पीढ़ी को यथावत् हस्तांतरित कर सकें।

इष्टिका मन्दिर, निबिया खेड़ा, संरक्षण से पूर्व

कुर्था स्थित देवालय, संरक्षण से पूर्व

इष्टिका मन्दिर, निबिया खेड़ा, संरक्षण के पश्चात्

कुर्था स्थित देवालय, संरक्षण के पश्चात्

इष्टिका मंदिर भीतरगांव १९वीं शती ई०

इष्टिका मंदिर भीतरगांव संरक्षण के पश्चात्

ये स्मारक हमारी अमूल्य धरोहर हैं इनका संरक्षण हमारा नैतिक कर्तव्य है।

सांस्कृतिक विरासत की रक्षा हेतु हमारा कर्त्तव्य

क्या करें ?

- स्मारक को साफ–सुथरा रखने में सहयोग दें।
- स्मारक के प्राकृतिक सौन्दर्य को बनाए रखने में सहयोग दें।
- स्मारक की गरिमा को बनाए रखें।
- स्मारक में उत्कीर्ण चित्रण, मूर्तियों आदि को दूर से देखें।
- असंरक्षित स्मारकों व यत्र–तत्र बिखरी कलाकृतियों की सुरक्षा सुनिश्चित करें।

क्या न करें।

- चित्रण व अन्य कलाकृतियों को न छुएं तथा उन पर जल, तीव्र प्रकाश व अन्य पूजा सामग्री का प्रयोग न करें।
- अपनी विरासत को महत्वहीन समझते हुए उपेक्षित न होने दें।
- अपने आचरण से ऐसा कोई कृत्य न करें जिससे स्मारक की भव्यता तथा सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक सौन्दर्य बोध पर नकारात्मक प्रभाव पड़े।
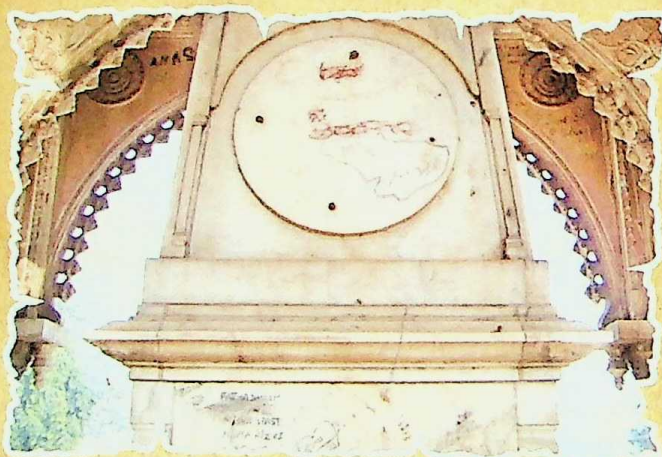
कृपया ऐसा न करें।

प्रकाशक
अधीक्षण पुरातत्त्वविद्
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, लखनऊ मण्डल,
नवां तल, केन्द्रीय भवन,
सेक्टर-'एच', अलीगंज, लखनऊ २२६०२४
दूरभाष:- 0522-2328220,2323904.
ईमेल-circleluc.asi@gmail.com.

योगदान:
आलेख: अनिल कुमार तिवारी, संजय कुमार सिंह, निकिता चंद्रा, विमल तिवारी
डिजाइन: एस० के० अरोरा, कमलेश पांगती, आकाश मिश्रा